❋ 24 जून 2014 (21-6-64) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] आत्मा भले अनादि है परन्तु उसकी स्टेज बदलती है, जैसे-जैसे समय बीतता जाता है तो उनकी स्थिति बदलती जाती है, वैसे आत्मा अनादि अविनाशी है, लेकिन आत्मा जैसा कर्म करती है वैसा फल पाती है। तो करने वाली रेसपान्सिबुल आत्मा है।

2] कई कहते हैं कि हम चाहते हैं कि अच्छा काम करें लेकिन पता नहीं फिर क्या होता है जो हमारा मन अच्छे तरफ लगता नहीं हैं, दूसरी तरफ लग जाता है क्योंकि आत्मा में अच्छे कर्म करने का बल नहीं है। हमारी स्थिति तमोप्रधान होने के कारण तमो का प्रभाव अभी जोर से है, जो हमको दबाता है इसलिए बुद्धि उसी तरफ जल्दी चली जाती है और अच्छे तरफ बुद्धि जाने में रूकावट आती है।

3] दूसरे किसी को भी दुनिया बनाने वाला नहीं कहेंगे, क्राइस्ट आया, बुद्ध आया तो उसने अपना नया धर्म स्थापन किया लेकिन दुनिया को बदलना और दुनिया बनाना, यह काम उसका है जो **वर्ल्ड क्रियेटर, वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी** है।

4] तो यह भी समझना है कि उनका कर्तव्य सभी आत्माओं से भिन्न है, लेकिन वह भी अपना कर्तव्य वा एक्ट अन्य आत्माओं की तरह इस मनुष्य सृष्टि में ही आ करके करते हैं।

5] यह है ही कर्म का खेत, जहाँ हरेक मनुष्य आत्मा अपना-अपना पार्ट प्ले करती है। इसमें परमात्मा का भी पार्ट है लेकिन वह आत्माओं के सदृश्य जन्म-मरण में नहीं आते हैं। आत्माओं के सदृश्य उनके कर्म का खाता उल्टा नहीं बनता है। वह कहते हैं मैं तो सर्फ तुम आत्माओं को लिबरेट करने आता हूँ इसीलिए मुझे लिब्रेटर, बन्धन से छुड़ाने वाला गति सद्गति दाता कहते हैं।

6] मैं भी एक सोल हूँ, मैं गॉड कोई दूसरी चीज़ नहीं हूँ। मैं भी सोल ही हूँ परन्तु मेरा काम बहुत बड़ा और ऊंचा है इसलिए मुझे गॉड कहते हैं। गॉड इज़ ट्रुथ कहते हैं, तो ट्रुथ क्या चीज़ है, किसमें ट्रुथ? यह भी समझने की बात है। कई समझते हैं कि जो सच बोलता है वही गॉड है। गॉड कोई और चीज़ नहीं है, बस सच बोलना चाहिए। परन्तु नहीं, गॉड इज ट्रुथ का मतलब ही है कि गॉड ने ही आ करके सभी बातों की सच्चाई बताई है, गॉड इज़ ट्रुथ माना गॉड ही ट्रुथ बतलाता है, उसमें ही सच्चाई है, तब तो उनको नॉलेजफुल कहते हैं। मनुष्य का जानना हद है, कहते भी हैं मनुष्य अल्पज्ञ है और परमात्मा के लिए कहते हैं वह सर्वज्ञ है, जिसको अंग्रेजी में नॉलेजफुल कहते हैं यानि सर्व का ज्ञाता अथवा जानने वाला है। तो जो सर्वज्ञ है वही ट्रुथ को जान सकता है।

7] परन्तु ऐसे नहीं कि कभी कोई मनुष्य का अच्छा हो गया तो कहें यह भगवान के किया....बस भगवान ऐसा ही करता है। लेकिन उसका बड़ा काम है, वर्ल्ड का काम है, दुनिया के सम्बन्ध की बात है। बाकी ऐसे नहीं कि किसी को थोड़ा पैसा मिल गया, यह भगवान ने किया, यह तो हम भी अच्छे कर्म करते हैं, तो उस कर्म का फल मिलता है। अच्छे बुरे कर्मों का हिसाब चलता है, उसका भी हम पाते रहते हैं लेकिन **परमात्मा ने आ करके जो कर्म सिखाया उसका जो फल है, वह अलग है।**

8] अल्पकाल का सुख तो बुद्धि के आधार पर भी मिलता है। परन्तु उसने जो नॉलेज दी उससे हम सदा सुख पाते हैं। तो परमात्मा का काम भिन्न हो गया ना।..... **सिर्फ तुम अपने कर्मों को पवित्र कैसे बनाओ, उसकी नॉलेज मैं बतलाता हूँ।** तो कर्म को पवित्र बनाना है, कर्म छोड़ना नहीं है। कर्म तो अनादि चीज़ है। यह कर्मक्षेत्र भी अनादि है। मनुष्य है तो कर्म भी है, परन्तु **उस कर्म को तुम श्रेष्ठ कैसे बनाओ वह आ करके सिखाता हूँ जिससे फिर तुम्हारे कर्म का खाता अकर्म रहता है।** अकर्म का मतलब है कोई बुरा खाता नहीं बनाना है।

❋ योग-

1] कहते हैं तुम मुझे याद करो तो श्रेष्ठ कर्म करने का बल आयेगा, नहीं तो तुम्हारे कर्म श्रेष्ठ नहीं रहेंगे।

2] तो बाप कहते हैं अभी मेरे से योग लगाओ और जो मैं समझ देता हूँ, उसी आधार से अपने पापों का जो बोझा है, बन्धन है, जो रूकावटें बन सामने आती हैं उससे अपना रास्ता साफ करते चलो।

3] अव्यक्त स्थिति में स्थित मिलन मनाओ तो वरदानों का भण्डार खुल जायेगा।

❋ धारणा-

1] बाप समझ दे करके समझाते हैं कि तुम्हारी जो ओरीज्नल स्टेज थी, अभी उसी को पकड़ लो। कैसे पकड़ो, उसका ज्ञान भी दे रहे हैं तो बल भी दे रहे हैं।

❋ सेवा-

1] ----